पर्यावरण शिक्षा के सन्दर्भ में शिक्षक दृष्टिकोण, प्रशिक्षण व्यवस्था एवं शिक्षण हेतु दक्षता का अध्ययन

मीना कुमारी
नेट, एम.एड., AAIDU, इलाहाबाद
सुरभि मिश्रा
एम0ए0 छात्रा, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय धर्मशास्त्रों में यह माना जाता है कि प्राणी मात्र का शरीर पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश तथा वायु पंचतत्वों से मिलकर बना है। अतः मानव का जीवन भी प्रकृति पर पूर्णतया निर्भर है। पर्यावरण में सामंजस्य एवं संतुलन मानव जीवन के विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है परन्तु मानव ने अपने निजी स्वार्थ हेतु पर्यावरण के सामंजस्य पर ध्यान न देकर उसके संतुलन को बिगाड़ा है। पर्यावरण के विविध अंगों की पूजा हमारे पूर्वज आदिकाल से करते आये हैं उसकी ओर ध्यान न देकर हमने उसके अस्तित्व को चुनौती दी और आज यही चुनौती हमारे अस्तित्व की चुनौती बनकर सामने खड़ी हो गयी है। पर्यावरण, प्रदूषण से सम्पूर्ण जगत चिंतित है और इसके प्रति चेतना जागृत करना समय की मांग है। यह कार्य कोई कानून या सरकार नही कर सकती इसके लिए शिक्षा व्यवस्था को ही माध्यम बनना पड़ेगा जो बालक की अभिवृत्ति, चिंतन पर्यावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करने का कार्य करना होगा। देश के पर्यावरण मंत्रालय द्वारा पर्यावरणीय शिक्षा को वरीयता दी गयी है। देश के विभिन्न आयु वर्ग के लोगों में जागरूकता लाने हेतु अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे है। पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षक, शिक्षार्थी तथा समाज के प्रबुद्व वर्ग को पर्यावरण संरक्षण अभियान से जोड़ा गया है। महात्मा गाँधी ने पारिस्थितिकी संतुलन पर बल देते हुए कहा था कि–''प्रकृति के पास सभी आवश्यकताओं के पूर्ति साधन है परन्तु सभी के लालच के पूर्ति के साधन नही है अर्थात् यदि केवल मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की बात हो तो प्रकृति सभी के आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है। परन्तु लोगों की लालच की बात आये तो वह विफल हो जाती है। लालची लोग प्रकृति का दोहन करके प्राकृतिक सम्पदा से भौतिक सुख–सुविधा के साधन और भौतिक धन एकत्र करने लगते है जिससे मूल आवश्यकताओं की पूर्ति बाधित होती है। पर्यावरण प्रदूषण एवं पारिस्थितिकी असंतुलन को दूर करने के लिए पर्यावरण संरक्षण एवं परिस्थितिकी संतुलन की आवश्यकता है और यह एक मात्र पर्यावरण शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। पर्यावरणीय शिक्षा बच्चों के अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि मानवीय विकास के चरम पर पहुचने पर पर्यावरण के साथ संतुलन स्थापित करने हेतु उसमें पर्यावरण संचेतना के प्रति उचित दृष्टिकोण रखना होगा। आधुनिक युग की बदलती परिस्थितियों में शिक्षक से यह आशा की जाती है कि वह पर्यावरण प्रदूषण रोकने एवं पर्यावरणीय संचेतना के विकास में अपना उचित योगदान दें। शिक्षक इन दायित्वों का निर्वहन तभी कर पायेगें जबकि उनमें स्वयं पर्यावरण शिक्षा के प्रति उचित दृष्टिकोण एवं ज्ञान हो। इस सम्बन्ध में यूनेस्कों ने सन् 1982 में शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरणीय शिक्षा को सम्मिलित करने की सिफारिश की और इसे सेवापूर्व एवं सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के अंग बनाये जाने पर बल दिया जिससे कि शिक्षक अपने छात्रों में ऐसी रूचियॉ, अभिवृत्तियॉ, दृष्टिकोण तथा कौशल विकसित कर सकें जो उन्हें भविष्य में पर्यावरण संरक्षण तथा प्रकृति के साथ अपना संतुलन बनाये रखने हेतु सहयोग करें इसीलिए आवश्यकता इस बात की थी कि शिक्षकों के पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण विषय के प्रति ज्ञान तथा विशेष योग्यता अर्जित करने सम्बन्धी रूचि को आंका जा सके। इस उद्देश्य से इस सर्वेक्षण अध्ययन को किया गया है।

उद्देश्यः–प्रस्तुत सर्वेक्षण अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये।

1. शिक्षकों का पर्यावरण शिक्षा के विषय में जानकारी को ज्ञात करना।
2. पर्यावरण शिक्षा हेतु प्रशिक्षण की अनिवार्यता के विषय में शिक्षकों का दृष्टिकोण ज्ञात करना।

3. पर्यावरण शिक्षा को शिक्षक प्रशिक्षण का अंग बनाये जाने के विषय में शिक्षकों का दृष्टिकोण ज्ञात करना।
4. सभी स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण का अंग बनाये जाने हेतु शिक्षकों का दृष्टिकोण ज्ञात करना।
5. पर्यावरण शिक्षा हेतु शिक्षकों में विशेष योग्यता के सम्बन्ध में शिक्षकों का दृष्टिकोण ज्ञात करना।

परिकल्पनाः—उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया।

- ❖ प्राथमिक स्तर के शिक्षकों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अनभिज्ञता अधिक है।
- ❖ पर्यावरण शिक्षा को प्रशिक्षण का अंग बनाया जाना जाहिये।
- ❖ शिक्षकों के अनुसार सभी स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण में पर्यावरण शिक्षा को सम्मिलित किया जाना चाहिये।
- ❖ पर्यावरण शिक्षा हेतु शिक्षकों को विशेष दक्षता की आवश्यकता होगी।

प्रयुक्त उपकरणः—उपर्युक्त सभी उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शोधकर्त्री द्वारा 20 कथनों से परिपूर्ण ***"पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण मापनी"*** का स्वयं निर्माण किया जिससे कि शिक्षकों से साक्षात्कार के माध्यम से उपयुक्त जानकारी प्राप्त हो सके।

न्यादर्शः—शोधकर्त्री द्वारा उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया जिसे नीचे सारिणी 1 में दर्शाया गया। सभी शिक्षक इलाहाबाद, कौशाम्बी व प्रतापगढ़ एवं गोरखपुर जिले के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से सम्बन्धित है

सारणी—1

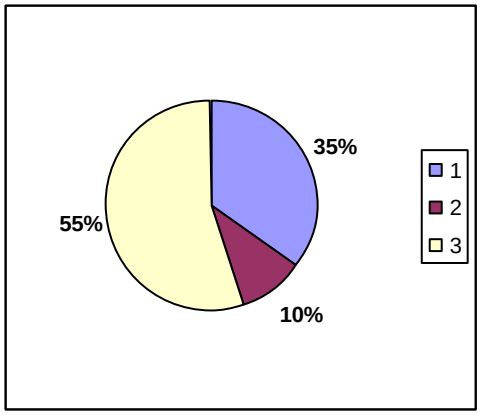
चयनित न्यादर्श का विवरण

प्राथमिक शिक्षा	माध्यमिक शिक्षा	उच्च शिक्षा	कुल
150 शिक्षक	150 शिक्षक	150 शिक्षक	450 शिक्षक

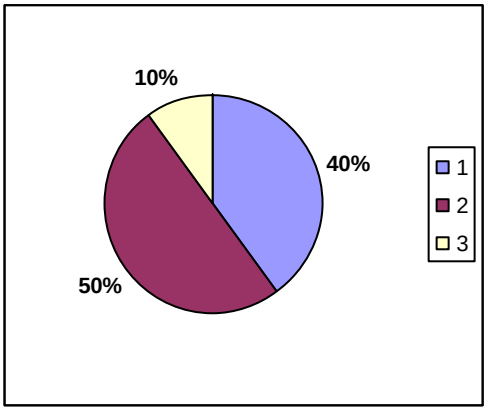
ऑकड़ों का संकलनः— शोधकर्त्री द्वारा स्वयं निर्मित उपकरण ***"पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण मापनी"*** का प्रशासन 450 अध्यापकों पर किया गया।

प्राप्त परिणामः—पर्यावरण शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण मापनी पर प्रतिक्रियायें सकारात्मक एवं नकारात्मक रूप में प्राप्त हुयी है, जिन्हें प्रतिशत के रूप में वृत्त चित्र में दर्शाया गया है।

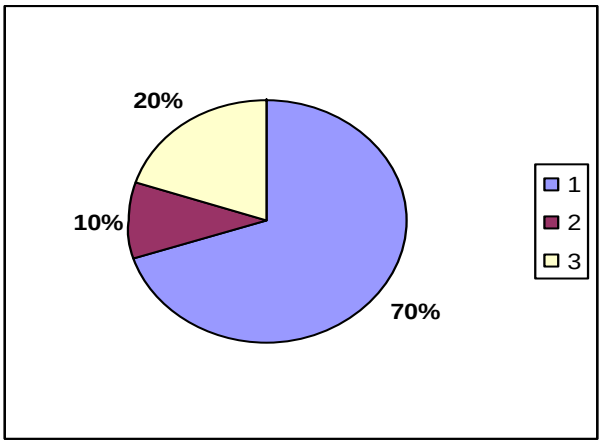
➢ **पर्यावरण एवं पर्यावरण शिक्षा के विषय में जानकारी के सम्बन्ध में प्राप्त मत।**



प्राथमिक स्तर के शिक्षक

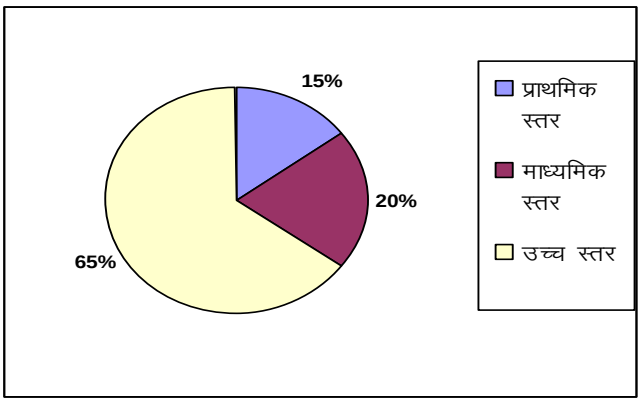


माध्यमिक स्तर के शिक्षक

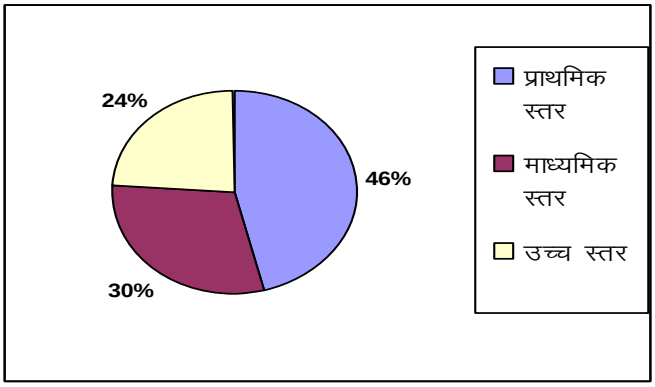


उच्च स्तर के शिक्षक

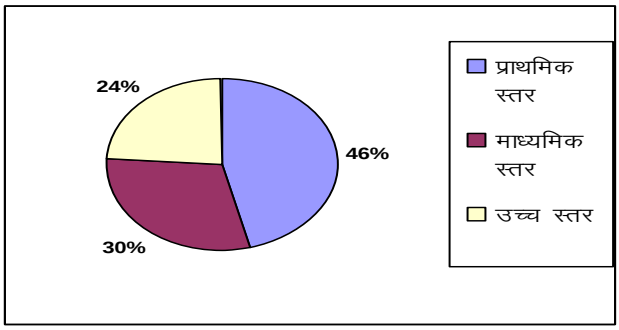
- पर्यावरण शिक्षा हेतु शिक्षकों के लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता के सन्दर्भ में मत



- पर्यावरण शिक्षा को शिक्षक प्रशिक्षण का अंग बनाये जाने के सन्दर्भ में मत

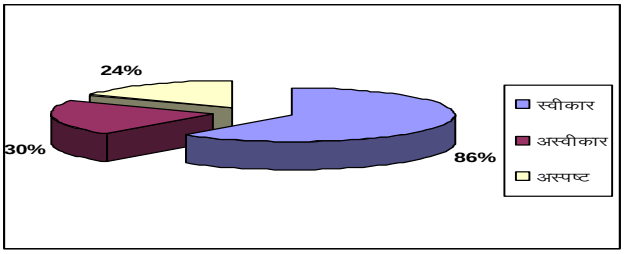


- **सभी स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण का अंग बनाये जाने के सन्दर्भ में मत।**



शिक्षक प्रशिक्षण

- **पर्यावरण शिक्षा हेतु शिक्षकों में विशेष योग्यता के सन्दर्भ में मत।**

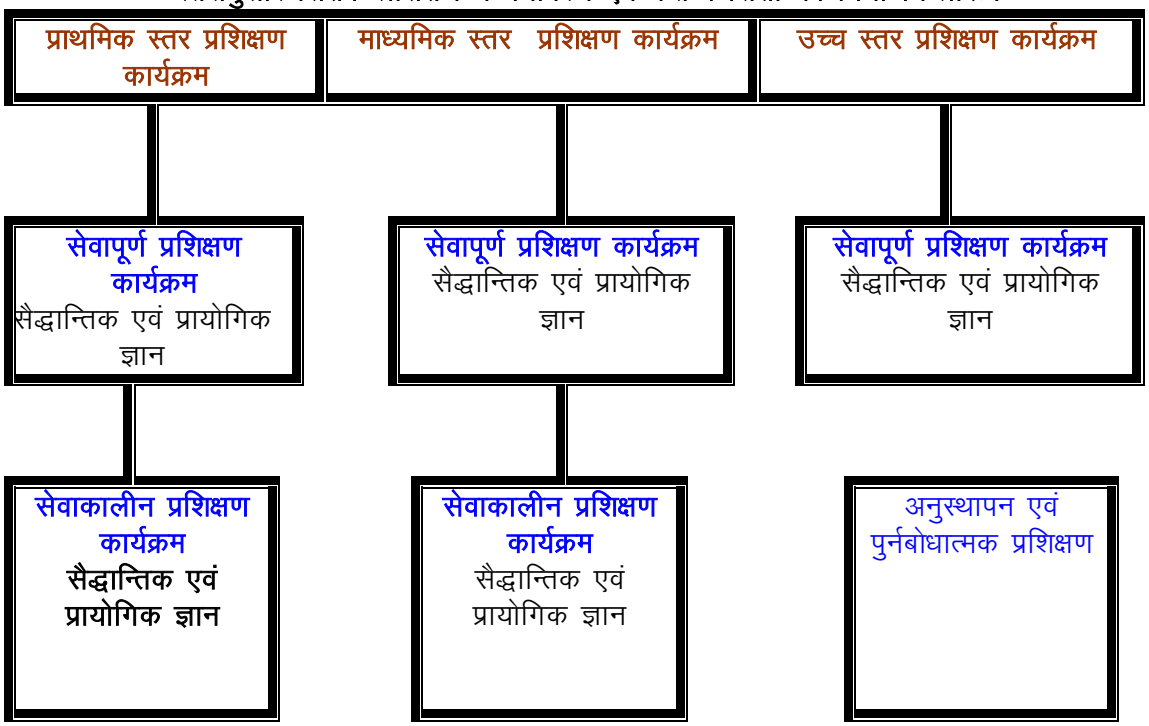


इस लघु अध्ययन से कुछ तथ्य स्पष्ट हो रहे है।

- शिक्षक वर्ग भी अभी पर्यावरण शिक्षा के विषय में स्पष्ट जानकारी नही रखता है।
- पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता को शिक्षक वर्ग स्वीकार करता है।
- सभी स्तर के शिक्षक यह मानते है कि पर्यावरण शिक्षा को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का अंग बनाया जाना चाहिये और इसके व्यवहारिक एवं सैद्वान्तिक ज्ञान देने हेतु प्रशिक्षण व्यवस्था में पूरा ध्यान देना चाहिए।
- सभी स्तर के शिक्षकों के अनुसार सभी प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम में आवश्यकतानुसार पर्यावरण शिक्षा की जानकारी दी जानी चाहिये।
- पर्यावरण शिक्षा हेतु शिक्षकों में विशेष दक्षता आवश्यक है और यह दक्षता शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम से ही दी जा सकती है।
- पर्यावरण शिक्षा हेतु शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को कृतप्रधान (Task Oriented) बनाया जाना चाहिये।

सर्वप्रथम अब यह देखना होगा कि पर्यावरण शिक्षा के सभी सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पक्षों से शिक्षकों को अवगत कराने के लिए क्या रणनीति बनायी जाये। इस प्रकार से नियोजित करके प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पर्यावरण शिक्षा को व्यवस्थित किया जा सकता है।

स्तरानुसार शिक्षक प्रशिक्षण में पर्यावरण एवं कर्तव्य शिक्षा का नियोजन प्रारूप



इस प्रकार से शिक्षकों को पर्यावरण शिक्षा हेतु सभी स्तर के शिक्षक प्रशिक्षण में सम्मिलित करके ज्ञान दिया जा सकता है। अब यह आवश्यक होगा कि हम उन दक्षताओं की चर्चा करें जो पर्यावरण शिक्षण हेतु अपेक्षित होंगी।

पर्यावरण शिक्षण हेतु ज्ञानात्मक कुशलताः—ज्ञानात्मक कुशलता में ये कुशलतायें होनी चाहिये।

- पर्यावरण का पूरा एवं स्पष्ट ज्ञान।
- पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता का स्पष्ट ज्ञान।
- पर्यावरण संरक्षण के प्रति कर्तव्यों का ज्ञान।
- पर्यावरण की आवश्यकता एवं एक सीमा तक विधिक ज्ञान।
- पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्यों का ज्ञान।
- पर्यावरण शिक्षण के लिये स्तरानुसार शिक्षण विधियों, तकनीकियों का स्पष्ट ज्ञान।
- पर्यावरण शिक्षण में उपस्थित समस्याओं का ज्ञान।
- पर्यावरण शिक्षा को अन्य विषयों के साथ सम्बद्ध करके ज्ञान देने की योग्यता।
- पर्यावरण शिक्षा हेतु किये जा रहे नवीन प्रयोगों का ज्ञान।
- स्तरानुसार पाठ्यक्रम सम्प्रेषण की युक्तियों का ज्ञान।
- पर्यावरण शिक्षण के पश्चात् अधिगम के मूल्यांकन विधियों का ज्ञान।
- अधिगम संसाधनों का पर्याप्त ज्ञान।

व्यक्तित्व सम्बन्धी दक्षताः—पर्यावरण शिक्षा हेतु शिक्षकों में मूलतः व्यक्तित्व सम्बन्धी कुशलतायें भी विकसित की जानी चाहिये क्योंकि छात्र शिक्षकों का अनुकरण करते हैं और शिक्षक का कुशल व्यक्तित्व की बालक में मानवता एवं पर्यावरण संचेतना उत्पन्न करने में सहायता करता है। इसमें शिक्षक के व्यक्तित्व के दोंनों की पक्षों में परिवर्तन की आवश्यकता है।

- ❖ मानसिक पक्ष (आंतरिक)
- ❖ शारीरिक पक्ष (बाह्य) मनोदैहिक गुण

मानसिक या व्यवहारगत कुशलताः–

- ❖ शिक्षक में मानवतावादी दृष्टिकोण होना चाहिये।
- ❖ शिक्षक समान लोकतंत्रात्मक दृष्टि रखने वाला तथा सभी विद्यार्थी से समान व्यवहार रखने वाला हो।
- ❖ शिक्षक व्यावहारिक, निष्पक्ष तथा खुले विचारों वाला हो।
- ❖ शिक्षक में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, आत्मदर्शन, आत्मनियंत्रण, सहिष्णुता, दायित्वभाव हो।
- ❖ उत्साही, वास्तविक परिस्थितियों का ज्ञान, लगन, समस्या समाधान की इच्छा एवं रूचियों की प्रबलता होनी चाहिये।
- ❖ सामाजिक, बर्हिमुखी, उत्तम समायोजनशीलता के गुण विद्यमान हो।
- ❖ व्यवहार में ही पर्यावरण में ही कर्तव्य बोध की झलक होनी चाहिये।
- ❖ पर्यावरण के संरक्षण क्रियाकलापों में सक्रिय भाग लेने वाला हो।

शारीरिक पक्ष से सम्बन्धित कुशलताः–

- ❖ उत्तम स्वास्थ्य एवं स्फूर्ति वाला हो।
- ❖ उपयुक्त एवं सादगीपूर्ण वेशभूषा से परिपूर्ण।
- ❖ गाम्भीर्य एवं प्रौढ़ता।
- ❖ जीवन की शुद्धता एवं अच्छी आदतें।

प्रायोगिक दक्षताः–पर्यावरण शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम के सैद्धान्ति ज्ञान के पश्चात् यह भी आवश्यक है कि शिक्षक उनका व्यवहारिक ज्ञान भी रखें क्योंकि पर्यावरण शिक्षा को जानने के लिए और इसके प्रायोगिक ज्ञान देने के लिए शिक्षक ने शिक्षण सम्बन्धी निम्न दक्षतायें अपेक्षित होगी।

- ❖ स्तरानुकूल पाठ्यवस्तु को कक्षा में प्रस्तुत करने की कुशलता।
- ❖ पर्यावरण के अन्य विषयों के ज्ञान के साथ सम्बन्ध करने की दक्षता।
- ❖ प्रत्येक स्तर के बालकों के लिए शिक्षण हेतु उपयुक्त एवं प्रभावशाली शिक्षण विधियों का चयन करने की कुशलता।
- ❖ पर्यावरण संरक्षण को आम जीवन की आवश्यकताओं की परिप्रेक्ष्य समझाने की दक्षता।
- ❖ शिक्षण हेतु उपयुक्त शिक्षण कोंशलों का चयन एवं प्रयोग।
- ❖ छात्रों में पर्यावरणों संरक्षण के प्रति शिक्षण के माध्यम से संचेतना जागृत करने की कुशलता।
- ❖ स्तरानुसार आवश्यक ज्ञान के प्रदर्शन की क्षमता विकसित करना।
- ❖ छात्रों में पर्यावरण शिक्षा से प्राप्त ज्ञान के उपयुक्त एवं कुशल प्रयोग की दक्षता उत्पन्न करना।
- ❖ शिक्षण के माध्यम कर्तव्य की भावना विकसित करने की क्षमता।
- ❖ अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता का व्यवहारिक ज्ञान देने की कुशलता।
- ❖ पर्यावरण शिक्षा के सम्बन्ध में निर्देशनात्मक साम्रगी के विकास की कुशलता।
- ❖ पर्यावरण शिक्षा का विद्यालय कार्यक्रम में स्पष्ट प्रयोग हेतु रणनीति तैयार करने की योग्यता।
- ❖ अधिगम के मापन हेतु प्रश्नावली, चेकलिस्ट आदि के निर्माण की दक्षता।

शिक्षणेत्तर दक्षताः–इसमें कक्षा शिक्षण के पश्चात् अन्य योग्यताएं सम्मिलित है। पर्यावरण शिक्षण हेतु शिक्षक का दायित्व कक्षा शिक्षण में उपयुक्त ज्ञान देना ही नही वरन् उससे भी आगे तक है। जो शिक्षक को करना चाहिए और इसके लिए शिक्षक ने ये दक्षतायें अपेक्षित होगी।

- ❖ विद्यालय क्रियाकलापों के माध्यम से छात्रों को अधिकारों के प्रयोग तथा दायित्वों को पूरा करने का अवसर उपलब्ध कराने की योग्यता।
- ❖ विद्यालय वातावरण में पर्यावरण शिक्षा के ज्ञान एवं प्रयोग हेतु उपयुक्त वातावरण का निर्माण करना।
- ❖ छात्रों को सामाजिक एवं सामुदायिक क्रियाकलापों में सहभागी बनाते हुए पर्यावरण संचेतना के कार्यक्रम को सक्रिय बनाना।
- ❖ विद्यार्थियों के व्यवहार एवं क्रियाकलापों में पर्यावरण के प्रति सचेतना उत्पन्न करने की क्षमता।
- ❖ पर्यावरण एवं उसके प्रति दायित्वों के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के क्रियाकलापों को प्रोत्साहन एवं सतत निरीक्षण की क्षमता।

- ❖ पाठ्येत्तर क्रियाकलापों एवं विद्यालय के नित्य दिवसीय क्रियाकलापों के माध्यम से छात्रों को पर्यावरण के प्रति दायित्व बोध एवं दायित्व निवर्हन के अवसर उपलब्ध कराना।
- ❖ छात्रों को समुदाय एवं राष्ट्र की समस्याओं के प्रति जागरूक करने हेतु यात्रा भ्रमण एवं सर्वेक्षण जैसे क्रियाकलापों के आयोजन की क्षमता।
- ❖ विद्यार्थियों में न्यायिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने की संगोष्ठी सम्मेलनों, व्याख्यानों का आयोजन करने की क्षमता।

सम्बन्ध स्थापन की दक्षताः—सम्बन्ध स्थापन शिक्षकों के महत्वपूर्ण दायित्वों में से एक है परन्तु इसके लिए उसमें दक्षता होनी चाहिए। क्योंकि पर्यावरण शिक्षा को मानव से जोड़ने पर ही उसे सम्मान प्राप्त होगा।

1. **विद्यार्थियों से सम्बन्ध स्थापनः**—पर्यावरण एवं पर्यावरण शिक्षा के लिए आवश्यक है कि शिक्षक स्वयं छात्र से सम्बन्ध स्थापित करने की दक्षता रखे।
   - ❖ विद्यार्थियों की समस्या को समझने की कुशलता।
   - ❖ समस्या के समाधान की कुशलता।
   - ❖ विद्यार्थी को विद्यार्थी के समीप लाने की दक्षता।
   - ❖ कक्षा को एक परिवार का एक रूप देने की दक्षता।
2. **समाज से सम्बन्धः**—पर्यावरण के प्रति संचेतना के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक समाज के प्रति जागरूक रहें। अपने समाज की वर्तमान परिस्थितियों, आवश्यकताओं एवं समस्याओं के प्रति निरन्तर नवीन जानकारी रखें, इसके लिए एक कुशलता होनी चाहिए।
   - ❖ समाज सेवा के कार्यो में स्वयं एवं समस्त विद्यालय परिवार की संलग्न करने की कुशलता।
   - ❖ पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति विद्यालय में संचेतना जगाने की दक्षता।
   - ❖ पर्यावरणीय संरक्षण की आवश्यकता का निरन्तर ज्ञान रखने की दक्षता।
   - ❖ विद्यालय एवं समुदाय के मध्य अच्छे मानवीय सम्बन्ध स्थापित करने की दक्षता।
3. **पर्यावरण से सम्बन्धित नवीन ज्ञान एवं प्रयोगों से सम्बन्ध स्थापनः**—पर्यावरण शिक्षा हेतु यह आवश्यक होगा कि शिक्षक अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण के सन्दर्भ में नवीन ज्ञान प्रयोग उपस्थिति समस्याओं, हनन आदि जैसे घटनाओं को नवीन ज्ञान रखें इसके लिए निम्न योग्यताएं होनी चाहिए।
   - ❖ पर्यावरण से सम्बन्धित विभिन्न आवश्यक तथ्यों एवं परिवर्तनों की निरन्तर जानकारी रखने की दक्षता।
   - ❖ आवश्यक विधिक पक्षों की जानकारी हेतु हुए फैसलों को समझने की दक्षता।
   - ❖ पर्यावरण की संरक्षण के सन्दर्भ में विश्व स्तर पर किये जा रहे प्रयासों की जानकारी प्राप्त करने की दक्षता।
   - ❖ पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित न्यायिक पक्ष को समझने की दक्षता।
   - ❖ पर्यावरण के संरक्षण एवं प्रयोग सम्बन्धों प्रयासों तथा क्रियाकलापों में सक्रिय भूमिका निभाने दक्षता।

पर्यावरण शिक्षा हेतु शिक्षक में अपेक्षित दक्षता उत्पन्न करने हेतु आवश्यक सेवापूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम मेंः—

- ❖ पर्यावरण शिक्षा को सभी स्तरों पर सेवापूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम में ही सम्मिलित किया जाय।
- ❖ शिक्षक प्रशिक्षक को भी इसके लिए तैयार करने हेतु प्रशिक्षण शिविर लगाया जाये। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पर्यावरण शिक्षा का सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक ज्ञान दिया जाये।
- ❖ पर्यावरण शिक्षा हेतु कृतप्रधान प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- ❖ पर्यावरण शिक्षा को महत्वपूर्ण मानकर उससे सम्बन्धित दक्षताओं को उत्पन्न करने के प्रयास किये जाए।
- ❖ पर्यावरण शिक्षण हेतु रूचिकर शिक्षण विधियों एवं तकनीकियों का ज्ञान प्रशिक्षणार्थियों को कराया जाये।
- ❖ पर्यावरण शिक्षण के प्रायोगिक ज्ञान हेतु कक्षा शिक्षण भी करवाया जाय।

- ❖ पर्यावरण सम्बन्धी विषयवस्तु प्रशिक्षण में मात्र ज्ञान देने तक ही सीमित न रखा क्योंकि जनसंख्या एवं पर्यावरण संचेतना से सम्बन्धित शिक्षा आज भी व्यवहारिक नही हो पाया है।

सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम में:–

- ❖ सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा में निरन्तर होने वाले नवाचारों से शिक्षकों को अवगत कराने के लिए इसे सम्मिलित किया जाय।
- ❖ प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर सेवापूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम में पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को सम्मिलित किया जा सकता है। परन्तु उच्च स्तर कक्षाओं के शिक्षकों को शिक्षण हेतु पर्यावरण शिक्षा हेतु विशेष जानकारी के लिए अनुस्थापन एवं पुर्नबोधात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को सम्मिलित किया जाय।
- ❖ सभी स्तर के शिक्षकों के लिए पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु विशेष संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन होना चाहिए।
- ❖ विशेष प्रशिक्षण शिविर पर्यावरण शिक्षा के व्यवहारिक ज्ञान हेतु अधिक उपयोगी सिद्ध होगें।

शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा पर्यावरण शिक्षा को शिक्षक प्रशिक्षण में ज्ञान देने हेतु आवश्यकः–

- ❖ शिक्षक प्रशिक्षक स्वयं भी पर्यावरण शिक्षा के सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक ज्ञान से लगभग अनभिज्ञ है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण में सकारात्मक एवं व्यवहारिक भूमिका निभाने हेतु यह आवश्यक होगा कि सभी स्तर के शिक्षक प्रशिक्षकों को इसके लिए प्रशिक्षण दिये जाये।
- ❖ प्राथमिक स्तर के प्रशिक्षण संस्थान डायट (जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान) के प्रशिक्षकों को राज्य शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा विशेष प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करके प्रशिक्षित किया जाए। इसके लिए ग्रीष्मकालीन अवकाश सदुपयोग किया जा सकता है।
- ❖ बी0एड0 प्रशिक्षकों हेतु एकेडमिक स्टाफ कालेजों द्वारा पर्यावरण शिक्षा से सम्बन्धित अनुस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा सकते है।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण संरक्षण संस्कृति का विकास करना है तो इसको शिक्षा के सभी अंगों में अनिवार्य रूप से सम्मिलित करना होगा। और इसके व्यवहारिक उपयोग हेतु सशक्त कृतप्रथान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (Task Oriented) के माध्यम से शिक्षकों को प्रभावी एवं सक्रिय भूमिका हेतु तैयार करना होगा।

सन्दर्भ

शर्मा एवं शर्मा (2003) : ***सामाजिक भौतिक एवं जैविक वातावरण,*** राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा–2.

गोयल एम0के0 (2002) : ***अवर इन्वायरमेन्टल एजूकेशन,*** विनोद पुस्तक मन्दिर.

सिंह बी0 (2002) : ***इन्वायरमेन्टल एजूकेशन,*** विनोद पुस्तक मन्दिर.

एस0सी0ई0आर0टी0 : ***शिक्षक प्रशिक्षण मंजूषा–प्राथमिक प्रशिक्षकों के लिए,*** एस0सी0ई0आर0आर0टी0, लखनऊ

उपाध्याय आर0बी0 (2003) : ***इन्वायरमेन्टल एजूकेशन,*** विनोद पुस्तक मन्दिर.

पाण्डेय एस0 (2004) : **ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय संचेतना का तुलनात्मक अध्ययन**, शोधपत्र.